ISSN 2347 - 503X

Research Chronicler

International Multidiciplinary Research Journal

Vol I Issue 2 : December 2013

Editor-In-chief
Prof. K. N. Shelke

www.research-chronicler.com

Research Chronicler

A peer-reviewed refereed and indexed international multidisciplinary research journal

Volume I Issue II: December – 2013

CONTENTS

Name of the Author	Title of the Paper	Download
Dr. Archana & Dr. Pooja Singh	Feminine Sensibility Vs. Sexuality: A New Dimension	1201PDF
Dr. Akhilesh Kumar Dwivedi	Interrogating Representations of History: A Study of Mukul Kesavan's *Looking Through Glass*	1202 PDF
Dr. A.P. Pandey	Problems and Promises in Translating Poetry	1203 PDF
Dr. Ketan K. Gediya	Generation Divide among Diaspora in Jhumpa Lahiri's *Unaccustomed Earth*	1204 PDF
Dr. Nisha Dahiya	Patriotic Urge in Sarojini Naidu's Poetry	1205 PDF
Md. Irshad	Shashi Deshpande's *That Long Silence*: A Study of Assertion and Emotional Explosion	1206 PDF
Dr. Shanti Tejwani ICT	: As an Effective Tool for Teacher Trainees	1207 PDF
Dr. Manoj Kumar Jain	Differences in Stock Price Reaction to Bond Rating Changes: With Special Ref from India	1208 PDF
Maushmi Thombare	Bahinabai Chaudhari – A Multidimensional Poet	1209 PDF
Prof. Deepak K. Nagarkar	Death as Redemption in Arthur Miller's *Death of a Salesman*	1210 PDF
Dr. Vijaykumar A. Patil	Zora Neale Hurston's Theory of Folklore	1211 PDF
Dr. Jaiprakash N. Singh	Dalitonki Vyatha-Katha: Dalitkatha	1212 PDF
Raj Kumar Mishra	Traces of Hindu Eco-Ethics in the Poetry of A.K. Ramanujan	1213 PDF
Dr. Nidhi Srivastava	A Comparative Study of Values and Adjustment of Secondary School Students With and Without Working Mothers	1214 PDF
Sanjeev Kumar Vishwakarma	*Pinjar*: From Verbal to Audio-visual Transmutation	1215 PDF
Swati Rani Debnath	W.B. Yeats: Transition from Romanticism to	1216 PDF

	Modernism	
Sushil Sarkar	Environment and Woman: Reflections on Exploitation through Eco-Feminism in Mahasweta Devi's *Imaginary Maps*	1217 PDF
Book Review		
Sangeeta Singh	Goddess in Exile: A Sad Tale of Female Existentialism	1218 PDF
Poetry		
Bhaskar Roy Barman	On The Marge	1219 PDF
Dr Seema P. Salgaonkar	Entrapped	1220 PDF
Jaydeep Sarangi	I Live for My Daughter / Writing Back	1221 PDF
Interview		
Prof. Masood Ahmed	Interview with Poet Arbind Kumar Choudhary	1222 PDF

दलितों की व्यथा–कथा ः दलितकथा

डॉ• जयप्रकाश नारायण सिंह
आर•जे•कॉलेज, घाटकोपर (प•) मुंबई भारत

ABSTRACT

'दलित' शब्द की व्युत्पति 'दल' धातु से हुई है जिसका अर्थ है – पिछड़ा शोषित रौंदा हुआ अविकसित अछूत आदि अर्थात् जिसे दबाया गया विकसित नहीं होने दिया गया परंपरा व्यवस्था से उपेक्षित रखा गया जिसका जीवन कीड़े–मकोड़े जैसा घृणित है ऐसा मानव दलित है। इन्हें अस्पृश्य अंत्यज दास हरिजन शूद्र आदि नाम भी दिए गए हैं। इन्हीं दलितों को केंद्र में रखकर लिखा गया साहित्य दलित साहित्य है। दलित साहित्य के संदर्भ में डॉ• आंबेडकर का कहना है – "आपको नहीं भूलना चाहिए कि हमारे देश में उपेक्षितों का दलितों का एवं दीन–दुखियों का एक अलग विश्व है। उनके दुःख उनकी व्यथाए जानिए और साहित्य के द्वारा उनका जीवन उन्नत बनाने के लिए आप आपकी सृजन शक्ति समर्पित कीजिए, सच्ची मानवता इसमें ही है।"

मैंने अपने आलेख का शीर्षक चुना 'दलितों की व्यथाकथा ः दलितकथा' तथा रमणिका गुप्ता द्वारा चयनित एवं संपादित 'दलित कहानी संचयन की हिंदी सेक्सन की अधिकांश कहानियों को अपने आलेख का विषय बनाया। जिनके संबंध में रमणिका गुप्ता का कहना है "इन कहानियों में दलित जीवन के कई कोण हैं – जीवन से जूझने के जिन्दा रहने के पीड़ा सहने के और उनसे उबरने के। समय के लम्बे अन्तराल को छूती हैं ये कहानिया। इसलिए दलित चेतना के उदय से लेकर संकल्प बनने तक का विकास इनमें उजागर होता है। हीनभावना से उबरना निर्मित होता आत्मसम्मान तनकर खड़ी होती अस्मिता और परिवर्तन का संकल्प विकसित होता नजर आता है। इनमें 'गुलाम हूँ मैं' का अहसास भी डंक मारता दिखता है तो उस अहसास से मुक्ति की छटपटाहट भी कुलबुलाती नजर आती है और नजर आता है यह सपना "जाति नहीं मनुष्य हूँ मैं – समाज का साझेदार हूँ मैं – औरों की तरह मेरी भी जीने की शर्तें हैं।" ये सपना इन कहानियों को दिशा देता है और लगने लगता है कि जैसे उन्हें ज्ञान इल्हाम या कुछ भी कहो हो गया है। कहीं – कहीं तो वह 'अप्पदीपोभव' बनकर रोशन हो जाता है और अंधेरे को काटने लगता है। कहीं – कहीं वह

संगठित होकर योजना बनाता है और कहीं सीधे संघर्ष में उतर कर राह तैयार करता है। कहीं अपनी पीड़ा को उकेर कर उनके मन में जिन्होंने उसे पशुवत बनाया□अपराध बोध पैदा करता है और शर्म दिलाता है और सफल हो जाता है अपने लक्ष्य में। सार्थक हो जाती है कहानी□जब वह चोट करती है और ये कहानियाँ चोट करती हैं।"—**01**

संग्रह की ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा लिखित प्रथम कहानी 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ' दलितों पर होने वाले अत्याचार एवं शोषण को रेखांकित करती है। किस तरह लोग दलितों के अनपढ़ होने का लाभ उठाकर उन्हें छलते रहें□यही पर्दाफाश करना कहानीकार का मुख्य उद्देश्य रहा है। प्रकारांतर से यह कहानी उनके शिक्षित होने से आई जागृति के साथ ही होने वाले लाभों को भी रेखांकित करती है। जिस सहज विश्वास के कारण सुदीप के पिता चौधरी के मुरीद थे और और तो और सुदीप को चौधरी द्वारा किए गए उपकार से वाकिफ कराकर उसे भी यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि पच्चीस चौका डेढ़ सौ ही होता है।पर सुदीप बिचारा करे तो क्या? पढ़े-लिखे मास्टर शिवनारायण का विश्वास करे या अनपढ़ पिता का। शिवनारायण गुरू का थप्पड़ उसे यह सोचने को विवश कर देता है कि□ "यदि मास्साब सही कहते हैं तो पिताजी ग़लत क्यूँ बता रहे हैं।पिताजी कहते हैं कि चौधरी बड़े आदमी हैं□झूठ नहीं बोलते। उसके हृदय में बवंडर उठने लगे। और उसे सान्त्वना तब मिलती है जब वह पच्चीस – पच्चीस की चार ढेरिया□लगाकर अंततः पिताजी की मदद कर उनके मन में विश्वास दिला देता है कि, "सुदीप ठीक कह रहा है, पच्चीस चौका सौ ही होते हैं। झूठ सच सामने था।"—**02** अतः अन्तस में टीस उभरना और यह कहना स्वाभाविक ही था, "कीड़े पड़ेंगे चौधरी –– कोई पानी देने वाला भी नहीं बचेगा।"

मोहनदास नैमिशराय की कहानी 'अपना गाँव' जहा□एक तरफ जमींदारों की काली करतूतों का पर्दाफाश करती है□वहीं दूसरी तरफ दलित कहे जाने वाले वर्ग की विवशताओं एवं मजबूरियों को भी बड़ी शिद्दत के साथ रेखांकित करती है। प्रकारांतर से आरक्षण एवं भ्रष्टाचार पर प्रकाश डालती है। कहानी की शुरूआत ही हमें विवश एवं आकृष्ट करती है–पूरी कहानी पढ़ जाने को। लेखक का यह वक्तव्य कि, "जिस गाह□ने आज तक कबूतरी का मुह□तक न देखा था□कलाई में पड़ी चूड़ियों की भी केवल आवाज सुनी थी□उसी को मादरजाद नंगा देखना पड़ा था। एक को शरीर से नंगा कर दिया गया था□शेष अपने मन से नंगे हो गए थे।" सीनाजोरी का आलम यह था कि जहा□ एक लठैत "अब अपने अपने घर में ही हगना – मूतना, ससुरों" की धमकी दे रहा था□वहीं दूसरी तरफ ठाकुर का मह□ला बेटा कहता सुनाई पड़ा□ "इस कबूतरी की तरह तुम सबकी औरतों को नंगा किया जाएगा□ तभी तुम्हारे दिमाग ठिकाने आएँगे।" इसे दबंगई का हद नहीं तो और क्या कह सकते हैं?

"शाम होते–होते कबूतरी घर लौट आई□वैसे ही नंगे बदन।गर्मी का आग बरसाता महीना और शरीर ठण्डे होते जा रहे थे। कपड़े पहनने के बाद भी उसे अपना शरीर नंगा ही महसूस हो रहा था।" आप सहज ही उसकी स्थिति का अनुमान लगा सकते हैं।

ठाकुर का बेटा उसकी अस्मिता को तार –तार कर उसकी इज्जत को लूटना चाहता था□लूटने पर आमादा था यह बात दूसरी औरत के इस स्वीकारोक्ति से खुलती है□–"ठाकुर मूल तो मूल, ब्याज भी नई छोड़ता। एक – एक पाई की कीमत चुकानी पड़ती है आसामी को और उसकी नई घरवाली को सबसे पैले। तब से मैं ठाकुर की आधी घरवाली हूँ।" फिर वह ठाकुर के उस कुचक का भी पर्दाफाश करती है जिसके तहत उसे यह सब भोगना पड़ा था।

चमारों का आपसी वाद – विवाद उनके मनोभावों को अभिव्यक्त करने में विशेष सहायक हुआ है। भीतर की चुभन ऐसी थी□जैसे कि काच□ के बहुत सारे टुकड़े उनके खून में मिल गए हों।" एक दो के मुह□से गालिया□भी निकल रहीं थी□ "कीड़े पड़े ससुरे के जन्म में, अपने बड़े बेटे की बऊ तक को भी न छोड़ा। वह आदमी थोड़ेई है□आदमी के जनम में निरा शैतान है।" ठाकुर की शैतानियत का पर्दाफाश ही तो करती हैं ये पंक्तिया□ वे अनशन करने की बात करते हैं जिसे गांधीवादी प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है।

कहानीकार का यह संकेतित करना कि ' उसकी जात की बहुत कम औरतें ऐसी होगी जिन्हें ठाकुर के बुलावे पर हवेली में न जाना पड़ा हो। एक – एक के बदन ने अनचाहे वह सब झेला था। इसलिए गाव□में कम उम्र की बेटियों के हाथ पीले कर उन्हें ससुराल भेज दिया जाता था। जो बाहर से इस गाव□में बहू बनकर आती थी□उनके पहले दो–तीन साल अजीब से धर्मसंकट में गुजरते थे। गाव□ में पहले से ही कुछ ऐसी परंपरा थी। उन्हीं परंपराओं को गाव□के लोग ओढ़ने–बिछाने के लिए मजबूर थे।'

अंततः काफी जद्दोजेहद के बाद थाने में रिपोर्ट लिखाने का निर्णय ले सके थे।लेखक की यह स्वीकारोक्ति, 'उनके भीतर–बाहर आग लगी थी। बाहर से अधिक अंदर का सूरज बेचैन कर रहा था।उन्हें जो सम्पत के शहर से लौटने के बाद उन सब के भीतर उग चुका था।' तिस पर भी थानेदार का यह कहना, "तुझे ठाकुर के मँझले ने नंगा किया। अब और नंगा होना चाहती है क्या।" पुलिस विभाग में व्याप्त दादागिरी एवं 'समरथ के नहिं दोस गुसाई' की उक्ति को चरितार्थ करता है।और तो और उल्टे उन्हें ही थाने में बंद होना पड़ता है और अंततः राजनीति के प्रविष्ट होने के बाद ही रिपोर्ट लिखी गई।

अनुपम द्वारा यह प्रश्न पूछने पर कि इसके पहले भी ऐसी कोई घटना हुई थी।हरिया की यह स्वीकारोक्ति□

> "हाँ साब, गाँव में सबसे पहले मेरे पोते की बऊ को ही नंगा किया गया। कुछ म्हारी बहू – बेटियों को हवेली में नंगा किया गया। दिन के उजाले में भी और रात के अंधेरे में भी।अब किस – किस का नाम बताऊ□ सारे गाव□ने झेला है – उसे। म्हारी बियरबानी मुह□से न कहें पर मन जानता है उनका।"**—03**

हरिया का पंचायत के बीच विवेक न खोना और सबकी बातों का माकूल जवाब देना उसके अनुभवी होने□दूरदर्शिता को दर्शाता है।हरिया का यह फैसला कि हम "नया गाँव और अपना गाँव

बसाएँगे" कहानी के शीर्षक और उसकी सूझबूझ दोनों को चरितार्थ करता है।

जयप्रकाश कर्दम की कहानी 'नो बार' सचमुच हमारी दोहरी मानसिकता का पर्दाफाश करती है। हम प्रगतिशील होने का ढोंग रचते हैं अवश्य पर लाख ढोंग रचने के बावजूद हमारा जातीय संस्कार हमारा पीछा नहीं छोड़ता है। इसी तथ्य को यह कहानी उजागर करती है। लड़की द्वारा सहज ढंग से यह सफाई देने पर भी कि "पापा जब हम जाति–पाति को मानते ही नहीं तो फिर वह किसी कास्ट का हो उससे क्या फर्क पड़ता है।" पर अंततः पापा के मन की बात उनकी जबान पर आ ही जाती है और वे यह कहे बिना रह नहीं पाते □

> "वह सब तो ठीक है कि हम जाति–पाति को नहीं मानते और हमने मैट्रिमोनियल में 'नो बार' छपवाया था, लेकिन फिर भी कुछ चीजें तो देखनी ही होती हैं। आखिर 'नो बार' का यह मतलब तो नहीं कि किसी चमार – चूहड़े के साथ– –।" —04

सुशीला टाकभौरे की कहानी सिलिया में जहां एक तरफ जातीय अहंकार की बू आती है□ वहीं दूसरी तरफ छोटी कही जानेवाली जातियों में बड़ी जाति के प्रति अविश्वास एवं दुर्भाव का भाव भी उजागर होता है। 1960 की सबसे अधिक विशिष्ट घटना घटी हिंदी अखबार 'नई दुनिया' में जब यह विज्ञापन छपा कि 'शूद्र वर्ण की वधू चाहिए।' भोपाल के जाने – माने युवा नेता सेठी जी अछूत कन्या के साथ विवाह करके समाज के सामने एक आदर्श रखना चाहते थे। उनकी केवल एक ही शर्त थी कि लड़की कम से कम मैट्रिक होनी चाहिए।

विज्ञापन पढ़ गाव□ के पढ़े – लिखे लोगों ने□ ब्राह्मण – बनियों ने सिलिया की मा□ को सलाह दी□

> "तुम्हारी बेटी तो मैट्रिक पढ़ रही है। बहुत होशियार और समझदार भी है – तुम उसका फोटो□ नाम□ पता और परिचय लिखकर भेज दो। तुम्हारी बेटी के तो भाग्य खुल जाएंगे□ राज करेगी। सेठी जी बहुत बड़े आदमी हैं□ तुम्हारी बेटी की किस्मत अच्छी है।"

इस विषय में घर में भी चर्चा होती। पड़ोसी और रिश्तेदार कहते, "फोटो और नाम – पता भेज दो।" तब सिलिया की माँ अपने घरवालों को अच्छी तरह समझाकर कहती□

> "नहीं भैया, यह सब बड़े लोगों के चोंचले हैं। आज सबको दिखाने के लिए हमारी बेटी के साथ शादी कर लेंगे और कल छोड़ दिया तो हम गरीब लोग उनका क्या कर लेंगे? अपनी इज्जत अपने समाज में रहकर ही हो सकती है। उनकी दिखावे की चार दिन की इज्जत हमें नहीं चाहिए। हमारी बेटी उनके परिवार और समाज में वैसा मान– सम्मान नहीं पा सकेगी। न ही फिर हमारे घर की रह जाएगी – न इधर की – न उधर की – हमसे भी दूर कर दी जाएगी। हम तो नहीं देवें अपनी बेटी। हमीं उसको खूब पढ़ाएगे□ – लिखाएगे□ उसकी किस्मत में होगा तो इससे ज्यादा मान – सम्मान वह खुद पा लेगी।" —05

इसी बीच मालती के रस्सी – बाल्टी को हाथ लगाने वाली घटना और हेमलता की मौसी से प्यासी

होने के बावजूद पानी न ले सकने की घटना की प्रतिक्रिया ने उसके उहापोह को और भी अधिक बढ़ा दिया था और वह सोचने लगी थी, "आखिर मालती ने कौन – सा जुर्म किया था – प्यास लगी पानी निकालकर पी लिया।" फिर वह सोचती – "हेमलता की मौसी जी से वह पानी क्यों नहीं ले सकी थी।" — और अब वह विज्ञापन – उच्चवर्ग का नवयुवक सामाजिक कार्यकर्ता जाति भेद मिटाने के लिए शूद्र वर्ण की अछूत कन्या से विवाह करेगा – यह सेठी महाशय का ढोंग है आडंबर है या सचमुच वे समाज की परंपरा को बदलने वाले सामाजिक कांति लाने वाले महापुरूष हैं?

सिलिया की यह सोच सचमुच काबिले तारीफ है कि

> "हम क्या इतने भी लाचार हैं, आत्म – सम्मान रहित हैं हमारा अपना भी तो कुछ अहंभाव है। उन्हें हमारी जरूरत है हमको उनकी जरूरत नहीं। हम उनके भरोसे क्यों रहें। पढ़ाई करूंगी पढ़ती रहूंगी शिक्षा के साथ अपने व्यक्तित्व को भी बड़ा बनाऊंगी। उन सभी परंपराओं के कारणों का पता लगाऊंगी जिन्होंने उन्हें अछूत बना दिया है। विद्या बुद्धि और विवेक से अपने आपको ऊंचा सिद्ध करके रहूंगी। किसी के सामने झुकूंगी नहीं। नहीं अपमान सहूँगी।" —06

इन बातों पर मन ही मन चिंतन – मनन करती सिलिया ने एक दिन अपनी मा और नानी से कहा "मैं शादी कभी नहीं करूँगी।" नानी खुश होकर बोली, "शादी तो एक न एक दिन करना ही है बेटी मगर इसके पहले तू खूब पढ़ाई कर ले इतनी बड़ी बन जा कि बड़ी जात के कहलाने वालों को अपने घर नौकर रख लेना।" माँ मन ही मन मुस्कुरा रही थी। माँ सोच रही थी, "मेरी सिल्लो रानी को मैं खूब पढ़ाऊंगी। उसे सम्मान के लायक बनाऊँगी।" इस प्रकार कहानी उच्च मानसिकता के साथ ही शिक्षा के अप्रतिम महत्व को भी रेखांकित करती है।

विगत लगभग एक दशक से इस देश में भूमण्डलीकरण उदारीकरण और निजीकरण की जो हवा चली है उसने दलितों के जीवन में आनेवाले परिवर्तनों को प्रभावित करना प्रारंभ कर दिया है। आज स्वास्थ्य शिक्षा और उद्योगों को सरकार जिस तेजी से निजी हाथों में दे रही है इससे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सार्वजनिक क्षेत्र में शायद ही कोई उद्योग रह पाए। यह पूरी प्रकिया आरक्षण के विरोध में है ऐसा शिक्षित दलितों का मानना है। इस दृष्टि से सूरजपाल चौहान की दृष्टि कहीं ज्यादा साफ है। उनकी कहानी 'साजिश' सामाजिक परिवर्तन की राह में वर्णवादी अफसरशाही के अवरोध को बड़ी बारीकी से पकड़ कर बेनकाब करती है। इस कथा का नायक नत्थू जब बैंक से लोन लेकर एक मेटाडोर खरीदना चाहता है तो बैंक मैनेजर राम सहाय उसे सलाह देता है कि "ट्रांसपोर्ट के काम में कई प्रकार के लफड़े हैं फिर तुझे इस काम का अनुभव भी नहीं है। यह काम तो बड़े व्यापारियों का है।"

> "तो फिर साहब आप ही बताएँ कि मैं क्या करूँ।" नत्थू असमंजस की – सी स्थिति में बोला। इस पर बैंक मैनेजर राम सहाय ने

नत्थू को प्यार से समझाते हुए कहा, “तू पढ़ा – लिखा है– –तू पिगरी लोन हेतु क्यों नहीं फार्म भर देता?” इस कहानी पर टिप्पणी करते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि लिखते हैं, “दलित यदि अपने व्यवसाय में कुछ बदलाव लाना चाहें तो यह तंत्र उसे घसीटकर उसे वहीं डाल देता है। राम सहाय बहुत ही चालाकी से नत्थू को सलाह देता है। तंत्र की ये मनोगत स्थितिया□दलितों की यथास्थिति बनाए रखने के लिए सक्रिय होती हैं।”—**07**

श्यौराज सिंह ‘बेचैन’ की कहानी ‘अस्थियों के अक्षर’ आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी कहानी है। लेखक की व्यथा – कथा अत्यंत ही मार्मिक बन पड़ी है। यह कहानी जहा□एक तरफ दलितों में व्याप्त कुरीतियों पर प्रकाश डालती है□वहीं दूसरी तरफ शिक्षा के अप्रतिम महत्व को भी रेखांकित करती है। लेखक अपने सौतेले बड़े भाई रूपसिंह के साथ मुकीमपुर के प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने के लिए भेजा जाता है। रूपसिंह पढ़ने में कमजोर है□ जबकि लेखक अपेक्षाकृत कुशाग्रबुद्धि का है। शिक्षक द्वारा यह सत्य उद्घाटित होने पर तीनों भाइयों – भिखारीलाल□डालचंद और छोटेलाल को खाने – पीने की चिंता से ज्यादा इस बात की चिंता सताने लगती है कि रूपसिंह पढ़ने में कमजोर है□ कारण उनका रूपसिंह को पढ़ा – लिखाकर बड़ा आदमी बनाने का रहा□जबकि लेखक को तो वे इसलिए पढ़ने भेजते थे कि उसको (रूपसिंह को) अकेले पढ़ाएंगे तो गा□– बस्ती के लोग कहेंगे कि अपने सगे को तो पढ़ा रहे हैं और सौतेले को नहीं पढ़ा रहे हैं। लेखक की मा□भिखारीलाल की दूसरी पत्नी के रूप में थी जिसे वह आये दिन गालिया□देता व मारता था। उस दिन वह बहाने बनाकर मा□को गरिया रहा था कि ‘ऐसा लड़का ले आई जो मेरे लड़के से ज्यादा हुश्यार है।’ तीनों भाइयों ने योजना बनाई जिसके अनुसार अपने सगे व सौतेले दोनों बेटों की किताबें – पट्टिया□जला दी। किंतु मा□ चीख – चीखकर औरों को बता रही थी, “काले पेट का आदमी है□जाको बेटा फेल है रओ तो मेरे न पढ़ जाय जा मारे दारीजार के ने किताबें जराई हू□ भिकरिया□बन्दे याद रखियो□ये सौराज जरूर पढ़ैगो और तेरे रूपा तू कितनोऊ□जलमर□ये नाह पढ़ पाएगो।” यह सुन ‘ये है ही बुरा आदमी’ कहकर लोग अपने – अपने घर चले गए। लटूरिया और बादशाह नामक दोनों भाई लेखक के लंगोटिया यार थे। उनकी मा□के पास वह मार – पीट के डर से छिप जाया करता था। कई बार तो वह रात में भी वहीं सो जाता था और सोते समय बिस्तर पर पेशाब भी कर देता था। पर लटूरिया की मा□बड़ी ही उदार थी और उसने लेखक को कोई सजा न दी।

डालचंद छोटी – मोटी चोरिया□करने□जुआ खेलने□आटे के गुल्ले बनाकर भैंस – बैलों को जहर देने में माहिर था। कारण मरे पशु से आमदनी ज्यादा होती थी। दिवाली से एक दिन पहले जुए में उसकी जीत हुई थी और सीने पर की गुप्त जेब नोटों की गड्डी से भरी हुई थी। लेखक ने उसमें से एक रूपया यह सोचकर चुराया कि पहले तो पता ही नहीं चलेगा और यदि पता भी चल गया तो वह एक रूपये की परवाह नहीं करेगा और इस प्रकार वह अपनी पढ़ाई हेतु किताबें खरीद लेगा। पर

डल्ला को पता चल गया और मा पर इल्जाम लगाकर डल्ला और भिखारी ने उसकी खूब पिटाई की। छोटेलाल व मा के पूछने पर वह मार के डर से इन्कार कर गया साफ झूठ बोल गया।

करीब – करीब इस घटना के बीस साल बाद जब लेखक ने ग्रेजुएशन कर नौकरी पा लिया तो वह मा को घटना बताने की उत्सुकता में था। मा भुखमरी बेकारी और भयंकर गरीबी के कारण टी•बी• जैसे रोग से ग्रस्त हो गई थी। मरने से पहले मा सच सुन ले और मेरी किताब की तमन्ना को जान सके मेरे गुनाहों के लिए मुझे मुआफ कर दे मैं ऐसा सोचता था लेकिन मा दवाई गोली और परहेज के अभाव में मौत से पहले मर गई। लेखक लाश भी नहीं देख पाया और जब गाव पहुचा तो चिता की राख भी ठंडी हो गयी थी। कई दिन लेखक अपनी कृतज्ञ स्मृतियों के साथ मा की राख पर जा वहा बैठता रहा।

प्रल्लाद चंद्रदास की कहानी 'लटकी हुई शर्त' एक अत्यंत सशक्त एवं प्रौढ़ दलित कहानी है। इस कहानी का नायक गंगाराम जिसे गाव के लड़के नंगाराम – नंगाराम कहकर चिढ़ाते हैं और जो दुबला – पतला होने के बावजूद अत्यधिक खाना खाने के लिए कुख्यात है आगे चलकर गंगाबाबू बन धन – जन दोनों से संपन्न हो जाता है। वह अपनी बिरादरी के लागों को ठाकुरों के यहा भोज पर जाने के लिए शर्त रखता है कि उनकी पत्तल भी अन्य बिरादरियों की तरह ही उठवाई जाए। वे स्वयं नहीं उठाएगे गंगाराम गाव में एक हरखू हाई स्कूल खुलवाता है जिससे और गंगाराम बन सकें। सारे दलित सम्मान पाने को आतुर थे। अतः वे सब आकर गंगाराम के साथ खड़े हो गए तो सवर्णों को लगने लगा कि "गंगाराम ने पूरे इलाके को बर्बाद कर दिया है कितने मेल – जोल के साथ रहते थे ये लोग।"—08 यह कहानी दलित चेतना की कहानी है। निश्चय ही आज के दलित जीवन का यह सबसे बड़ा सच है कि आज दलित सम्मान पाने के लिए ही साहित्य – समाज और राजनीति में संघर्ष कर रहे हैं। ये सारी उथल – पुथल उसी का परिणाम है। कहानी विचारोत्तेजक है।

प्रेम कापड़िया की कहानी 'हरिजन' एक तरफ जहा देवदासियों के नारकीय जीवन पर प्रकाश डालती है, वहीं 'हरिजन' कहे जाने वाले ये बच्चे समाज में कितनी उपेक्षा की दृष्टि से देखे जा रहे हैं इस तथ्य पर भी प्रकाश डालती है। प्रिया और प्रेम दो अत्यंत समझदार प्रेमी है जो अंतरजातीय विवाह रचाकर आनंदपूर्वक सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कहानी का नायक प्रेम जहा एक तरफ देवदासियों की विवशता एवं अपनी मा परवतिया के होने न होने को लेकर दुखी है वहीं प्रिया के स्नेहपूर्ण सहृदय व्यवहार के कारण अत्यंत सुख का अनुभव करता है। वह दलित चेतना के साथ ही प्रकारांतर से नारी चेतना को भी रेखांकित करता हुआ कह उठता है, "इस मनुवादी सोच को दिल से निकालकर फेंक दो – –जब औरत पुरूष के समान शिक्षा ग्रहण करती है तो वह दासी कैसे है? अपनी योग्यता एवं प्रिया के पिता की मदद से अंततः वह अपनी मा परवतिया को ढूढ़ निकालता है और उसे बताता है "मैं– –मैं तेरा परेमा हू मा – –तेरा बेटा परेमा।" – –हा मा – – तुम्हें अभी हमारे घर चलना है। तेरी बहू भी है।"

आप प्रेम एवं उसकी मा□ की विवशता एवं बदनसीबी को लेखक के इस वाक्य द्वारा समझ सकते हैं – "बेटा ये हमारी बदनसीबी है कि तेरे बाप का पक्का पता नहीं – – जो औरत रोज नए मर्द के साथ सोती हो□ उसके बच्चे के बाप का नाम कैसे पता चल सकता है?"—09

कहानी का लक्ष्य धर्म के नाम पर इतने बड़े अन्याय का पर्दाफाश करने के साथ ही साथ शिक्षा के अप्रतिम महत्व को जीवन में रेखांकित करते हुए दलित कहे जाने वाले लोगों में जागरूकता पैदा करना□ ससम्मान जीने का भाव पैदा करना है। यह कहानी नर – नर के बीच ही नहीं नर – नारी के बीच समता का भाव बनाये रखने पर बल देती है।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'फुलवा' – "रस्सी जल गई पर ऐंठन बाकी है" की कहावत चरितार्थ करती है। आज भी जातीय अहंकार बड़ी कही जानेवाली जातियों को चैन से जीने नहीं देता है। वे उसका कुफल भी भोग रहे हैं पर तिस पर भी आंख खुल नहीं रही है□ क्योंकि वह बहुत कुछ स्वभाव या संस्कार का अंग बन गया है। रामेश्वर का सिर इस बात से ही भिन्ना उठता है कि पंडित जी को कोई नहीं जानता है और फुलवा के छोरे को पोर – पोर जानता है। फुलवा किरायेदार नहीं□ मालकिन है कोठी की□ यह जान जात्याभिमानी रामेश्वर डाह से सुलगने लगता है।

समय सौदागर है रामेश्वर आज भी उसी कुए□ से पानी भरता है□ फुलवा के रसोई में भी नल है। – – यह तो छत क्या मैदान है। उसकी हवेली का जितना आग□ फुलवा के घर की उतनी छत। तब और अब का अंतर देख रामेश्वर की आख□ आश्चर्य से खुली की खुली रह जाती है। फुलवा द्वारा इस सत्य के उदघाटित करने पर कि कुछ□ उसकी बहू नहीं नौकरानी है और जाति से राजपूत है और अब तो मेरी बेटी–सी है। रामेश्वर शर्म और ग्लानि से नीचे धंसता चला गया था। आप सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि वह कितना दुखी हुआ होगा। तभी तो बरबस उसके मुख से ये शब्द फूट पड़े, "आड़े वक्त आदमी असहाय हो जाता है। एक समय राजा हरिश्चंद्र ने भी नीची जाति के घर पानी भरा था।" फुलवा द्वारा इस बात के उदघाटित करने पर कि 'गाँव में छत्तीस फाँक हैं। शहर में दो ही जात होती है – अमीर और गरीब। इसकी पुष्टि तब और हो जाती है जब वह देखता है – 'पण्डिताइन पायताने, फुलवा सिरहाने। देहरी की ईंट चौबारे। अनुरक्ति एवं विरक्ति के बीच ईर्ष्या और

द्वेष ऐसी जलन पैदा कर रहे थे जैसे अधपके फोड़े में पीब और लहू।

पंडिताइन के यहाँ का दृश्य देखकर भी रामेश्वर की आँखें नहीं खुलती। दादी के सत्परामर्श देने पर वह अपने को रोक नहीं पाता और कह उठता है "दादी फुलवा चाहे सोने की हो जाए, रहेगी उसी जात की। मैंने तो उसके घर का पानी तक नहीं पिया। धर्म भ्रष्ट होने से मर जाना अच्छा समझता है – रामेश्वर।"

पंडिताइन ने उसे डपटा, "तू तो कुएँ का मेढक ही रहा रामसेरिया। अब तो पद और पैसे का जमाना है जात – पात का नहीं। फुलवन्ता का राधामोहन – – एस•पी• है एस•पी•। एक बात बताऊँ तुझे जाकर मेमसाब के पाँव पकड़ ले और तब तक मत छोड़ना जब तक वह हाँ न कह दे।"– – "चरण छुओ बहूरानी के। मेरे बेटे को तो उसी ने दूसरी जिंदगी दी है।"

> 'रामेश्वर के शरीर पर जैसे किसी ने तेजाब उड़ेल दिया था। जिस औरत को वह द्रौपदी–सा बे आबरू करने की सोच रहा था उसी के पाँव पकड़ ले – पंडिताइन ने यह कैसी बात कह दी। अगर दूसरा होता तो कंठ पर अँगूठा रख देता।' —10

पंडिताइन ने रामेश्वर से भीतर की सांकल लगा चुपचाप सो जाने को कहा पर यह क्या 'बकरी की मींगन और पेशाब से समूचा गैरेज गंधा रहा था। कुत्ते की खों–खों अलग।–– उसे रह–रहकर फुलवा की कोठी याद आने लगी। वह आँखें मीचे रहता करवट बदलता लेकिन नींद नहीं आती थी। एकाएक कुत्ते की खाँसी बढ़ गई थी और वह उल्टी करने लगा था। बदबू से रामेश्वर की नकसीर रूधने लगी मितली आ गई उसे। वह चारपाई पर उठकर बैठ गया था। बत्ती आन करके घड़ी देखी पौने बारह बजे थे। अपना बैग लेकर वह निकल आया था।– – उसके कदम अनायास ही फुलवा की कोठी की तरफ बढ़ने लगे थे।' रमणिका गुप्ता के शब्दों में वह समझ जाता है – 'नदी पार करनी है तो नौका को सिर पर लादकर ले जाना ही पड़ेगा।' अर्थात् अपने बेटे के लिए नौकरी पानी है तो उसे फुलवा के घर लौटना ही पड़ेगा, उसके एस•पी• बेटे से पैरवी कराने के लिए।

पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी की कहानी 'प्रतिशोध' – 'यथा नाम्नः तथा गुणः' की कहावत चरितार्थ करती है। कोसल के हरिजन आदिवासियों की व्यथा – कथा का अहसास गाँव के सरपंच एवं ठाकुरों को तब हुआ जब उनके मकान स्वयं धू – धू करके जलने लगे।

कावेरी की 'सुमंगली' कहानी सुगिया की व्यथा – कथा का जीवंत दस्तावेज है। इस संसार में कैसे – कैसे हैवान रहते हैं और दूसरों की मजबूरी का किस

तरह फायदा उठाते हैं। इसका सहज ही अनुमान इस कहानी को पढ़कर लगाया जा सकता है। इस संसार में सुगिया का कोई हमदर्द है तो बस सुमंगली नाम की कुतिया जो उसके लिए बहन, बेटी या दादी सब कुछ है। शेष सबने तो उसे बस छला है, छलावा दिया है।

बी•एल• नायर की कहानी 'चतुरी चमार की चाट' सवर्ण जातियों के मन में बसी दलित जातियों के प्रति घृणा को नंगा करती है। चतुरी पंडित चंदन चौबे जी के गाँव का चमार है जो अपनी नैतिकता, श्रम और सद्व्यवहार से पंडित जी का दिल जीत लेता है। जब गाँव में काम नहीं रहता तो पंडित जी शहर जाकर चाट बेचने लगते हैं। काम बढ़ने पर उन्हें एक नौकर की जरूरत महसूस होती है और वह गाँव से चतुरी को बुलवा लेते हैं। धीरे – धीरे पंडितजी रेहड़ी पर चतुरी को भेजने लगते हैं लेकिन चतुरी के मन में डर बसा रहता है कि जब उसकी जाति का लोगों पता चलेगा तो लोग उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे। अतः 'चौबे की चाट' की जगह 'चतुरी चमार की चाट' लिखवाकर जैसे ही वह रेहड़ी चौराहे पर लाता है तो मुहल्ले के युवक उसे बुरा–भला कहने लगते हैं और चतुरी चमार अपनी जाति के कारण अपमानित महसूस करता है तथा लौट आता है। इस प्रकार 'चतुरी चमार की चाट' जाति और अर्थ(धन) के अंतरसंबंधों को उद्घाटित करनेवाली सशक्त एवं सफल कहानी है। कहानी के अंतिम वाक्य में आशावादी स्वर भी है – "अभी तुम्हारी चाट बिकने का समय आने में देर है।" —11

कुसुम वियोगी की कहानी 'अंतिम बयान' एवं कुसुम मेघवाल की कहानी 'अंगारा' दलितों की मनःस्थिति में आए बदलाव और मर्दानगी 'हने को हनिए दोष – पाप न गनिए' की कहावत को चरितार्थ करती है। अंतिम बयान कहानी की नायिका 'अतरो' जहाँ राजेंद्र का एवं 'अंगारा' की नायिका 'जमना' सुमेर सिंह के पुरूषत्व के प्रतीक अंग को काटकर शरीर से अलग कर नई मिसालें कायम की हैं। दोनों की दिलेरी एवं मर्दानगी काबिले तारीफ है। अंतर मात्र इतना है कि अतरो ने अपनी अस्मिता लुटने के पूर्व ही जहाँ ऐसा करिश्मा दिखाया था, वहीं जमना ने बलात्कार का शिकार होने के बाद ऐसा किया था। पर सचमुच प्रतिशोध का ऐसा तरीका ऐसा करने वालों को सीख देने के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य – सा हो गया है जिससे उनके वहशीपन एवं दरिंदगी पर नियंत्रण पाया जा सके।

दयानंद बटोही की कहानी 'सुरंग' का कथानक शिक्षा जगत की बदरंग छवि हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है कि किस तरह एक दलित शोधार्थी को विश्वविद्यालय में शोध करने से रोका जाता है, क्योंकि वह रास्ता अच्छे जीवन की ओर जाता है। इसमें सिद्धांत विचार और योग्यता के काँटे बिछाए जाते हैं, ताकि उस पर चलने से पूर्व ही दलित छात्र लहुलुहान हो जाए। दलित जीवन की विसंगतियाँ

ही बटोही की कहानियों का सच है जो भोगकर लिखा गया है इसलिए बहुत मारक है। देर तक बेचैन किए रहता है अपने पाठकों को। —12

सत्यप्रकाश की 'दलित ब्राह्मण' कहानी में उन दलितों को व्यंग्य का विषय बनाया गया है जो दलित होते हुए भी दलित विरोधी हैं दलितों का अहित करते हैं।

अंततः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि इन चयनित दलित कथाओं में न केवल दलितों की व्यथा – कथा का ही चित्रण हुआ है वरन् उनके असंतोष छटपटाहट आकोश आशाओं – आकांक्षाओं की कहीं कुलबुलाहट तो कहीं कुलाचें चित्रित हुई हैं। कतिपय कहानियों में तो वे 'अप्प दीपोभव' का बुद्ध वचन भी चरितार्थ करते हुए दिखते हैं। कथ्य भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से भी ये कहानिया काफी सफल साबित हुई हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

01• 'दलित कहानी संचयन' चयन एवं संपादन – रमणिका गुप्ता प्रथम संस्करण **2003** पृष्ठ **17**।

02• 'दलित कहानी संचयन', 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ' – ओमप्रकाश वाल्मीकि प्रथम संस्करण **2003** पृष्ठ **27**।

03•'दलित कहानी संचयन', 'अपना गाँव' – मोहनदास नैमिसराय प्रथम संस्करण **2003** पृष्ठ **47**।

04• 'दलित कहानी संचयन', 'नो बार' – जय प्रकाश कर्दम प्रथम संस्करण **2003** पृष्ठ **60**।

05• 'दलित कहानी संचयन', 'सिलिया' – सुशीला टाकभौरे प्रथम संस्करण **2003** पृष्ठ **61–62**।

06• 'दलित कहानी संचयन', 'सिलिया' – सुशीला टाकभौरे प्रथम संस्करण **2003** पृष्ठ **64–65**।

07• 'दलित साहित्यः परंपरा और विन्यास' – डॉ• एन• सिंह संस्करण **2011** पृष्ठ **18**।

08•'दलित कहानी संचयन' चयन एवं संपादन – रमणिका गुप्ता प्रथम संस्करण **2003** पृष्ठ **84**।

09•'दलित कहानी संचयन' चयन एवं संपादन, 'हरिजन' – प्रेम कापड़िया प्रथम संस्करण **2003** पृष्ठ **91**।

10•'दलित कहानी संचयन' चयन एवं संपादन, 'फुलवा' – रतन कुमार सांभरिया प्रथम संस्करण **2003** पृष्ठ **104**।

11•'दलित कहानी संचयन' चयन एवं संपादन, 'चतुरी चमार की चाट' – बी• एल• नायर, प्रथम संस्करण, **2003** पृष्ठ **134**।

12• 'दलित साहित्यः परंपरा और विन्यास' – डॉ• एन• सिंह, संस्करण, **2011** पृष्ठ **33**।

अन्य सहायक ग्रंथ :

01• 'भारतीय साहित्य एवं दलित चेतना', संपादक — डॉ• धनंजय चौहाण, डॉ• धीरजभाई वणकर।

02• 'भारतीय दलित साहित्यः परिप्रेक्ष्य', संपादक — पुन्नी सिंह कमला प्रसाद राजेंद्र शर्मा।